बरसिये जल

देवेन्द्र कुमार मिश्रा

बरसिये जल
तन में उमस
कंठ में प्यास
कब की बीत गई ग्रीष्म
अब तो आषाढ़ भी चला
तुम न आये
बादल बनकर न छाये
पानी तुम कहां हो
नदी-नाले सूखे
पेड़-पौधे भी रूखे
धरती आकुल
मनुज व्याकुल
जल तुम कहां हो।
बरसो, तुम्हारी प्रतीक्षा है
न बरसने की इच्छा है
तो सुनो जीवन के अमृत
जो धन-दौलत के लिए हैं उन्मत्त।
जिन्होंने पेड़ काटे, पहाड़ काटे
नदियों का रुख मोड़ा
उनकी करनी से हमारी मत करो दुर्गत
आपका गुस्सा है स्वाभाविक
किन्तु हम गरीब किसान
हम पानी के प्यासे इंसान
हम समझते हैं रुपया नहीं
पानी है जीवन गति
किन्तु लोभियों की फिर गई मति
उनका क्या है
वे खरीद लेंगे बाहर से
या बस जायेंगे विदेश
किन्तु कृषि प्रधान देश में
इस प्रिय भारत में
हमें आपका ही सहारा है
आप नहीं तो मौत है
आप हैं तो बहारा है।
रहम करो, तरस खाओ
साल भर का
पानी बरसाओ
मेघ बनकर छा जाओ
सावन की झड़ी लगाओ
मनुष्य है लोभ का मारा
किन्तु आप न करें किनारा
करें अपने धर्म का पालन
बरसे कि हो जीवन-यापन
हमें बस आपका सहारा
करे तृप्त धरा को
ताकि उपजे अन्न
हो जायें हम धन्य।
मनुष्य जाति की ओर से
करते हैं निवेदन
आइये बरसिये दन-दन

''कैसा होगा वो सावन''
सोचो कैसा होगा वो सावन
जिसमें अंगारे बरसेंगे
नहीं होगी मेघों की गर्जन
प्यासी-प्यासी होगी धरती
और ताप से झुलसेगा हर जन।
नदी-तालाब सूखे-सूखे
पशु-पक्षी सब प्यासे भूखे
न अमुआ पर होगा आम
न कोई कोयल कूकेगी
सोचो कैसा होगा वो सावन
जब कुछ भी न होगा मन भावन
झुलसेंगें झूले
गोरी कैसे गायेगी गीत
फसलें उजाड़ होंगी
प्यासे कंठ से कैसे निकलेगा
फागुन का संगीत।
सूखे कुएं से परिहारिन उदास होगी
धरा पर मृत्यु साक्षात् होगी
सारे मौसम बेमौसम होंगे
जुग-जुग जियो के आशीष बेदम होंगे
कैसा होगा वो सावन
जब मेले नहीं चिंताओं के संताप सजेंगे।

मिलना तय है ही
रेगिस्तान में
पानी मिल जाये
तो किस्मत
वरना रेत तो है ही।
समन्दर में मीठा पानी
मिल जाये
तो नसीब
वरना खारा तो है ही।
भरोसे मत रहना
भाग्य के
लकीरें काम कर जायें तो ठीक
अन्यथा मेहनत तो है ही।
युद्ध में प्रेम की बांसुरी
नहीं बजती
गीता सुनाता कोई कृष्ण
मिल जाये तो अहोभाग्य
विनाश ही नियति है युद्ध की
धर्म की ध्वजा थामे रहो कृष्ण तो
मिलना तय है ही।

संपर्क करें:
देवेन्द्र कुमार मिश्रा
पाटनी कालोनी, भरत नगर, चन्दनगांव
छिन्दवाड़ा (म.प्र.) 480 001
मो. 9425405022